॥ ॐ श्री नकलंग देव ॥

श्री अनूप स्वामीजी

जीवन-दर्शन

प्रकाशक :

श्री अनूप मण्डल सेवा समिति राजस्थान

मुख्यालय जाखोड़ा

सहयोग : समस्त अनूप मण्डल

श्री अनूप मण्डल सेवा समिति, राजस्थान
श्री अनूप स्वामी
अनूप जीवन-दर्शन

जगत उद्धारक रहस्य, दृष्टा, निष्कलंक परमात्मा।
विश्व कल्याणर्थ लोके अवतरित श्री अनूपस्वामिने नमोनमः ॥

विंश्व शान्ति के मार्ग दर्शक, साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक- पुरुष युगावतार परम पुज्य सदा स्मरणीय श्री अनूप स्वामी निष्कलंक अवतार के जीवन दर्शन को शब्दों में अभिव्यक्त करना सागर को चम्मच से नापने का प्रयास है।परन्तु वर्तमान समय में अनूप स्वामीजी के जीवन एवं संदेश के बारे में व्याप्त भ्रान्तियों के निवारण हेतु कुछ लिखना सार्थक, प्रासंगिक एवं परमावश्यक है।

श्री अनूप स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ला चतुर्दशी संवत् 1905 को रावणा राजपूत क्षत्रीय कुल में एक साधारण परिवार में पाली जिले के एक छोटे से गांव बांगडी में हुआ था। बांगडी गांव राष्ट्रीय राजमार्ग 14 पर स्थित

कस्बे साण्डेराव से 3 किलोमीटर दूर स्थित है। श्री अनूप स्वामी का बचपन का नाम श्री ओखसिंह था। उनके पिता का नाम श्री हीरासिंहजी एवं माता का नाम जेतादे था। उनकी गौत्र चौहान एवं उपगौत्र (नख) मादरेसा थी। उनके भक्त श्री हरिचंद सोनी ने लिखा है-

साख चौहान अनूपदास, नख मादरेसा जाण।
पिता तो हीरासिंहजी, मात्ता करू बखाण।
माता करू बखाण, जैत माँ गोद खिलाया।
पाया अमृत दूध, धर्म का मंगल गाया।
कहे सोनी हरिचंद, सद्गुरु कंचन मोती खाण।
साख चौहान अनूपदास, नख मादरेसा जाण।

श्री ओखसिंहजी को उनके माता पिता किसी प्रकार की विद्यालय शिक्षा या अक्षर ज्ञान नहीं करा सके। श्री ओखसिंह के भाईयों का नाम श्री भीमसिंह एवं श्री किशन सिंह था। उनके माता पिता ने बचपन में ही उनको जीविकापार्जन के लिये भेजा। वे गांव की गाये चराते थे।

श्री ओखसिंहजी दयालु, भावुक एवं अत्यन्त संवेदनशील प्रकृति के थे। गायों के साथ उनके बछड़े भी चराते थे। जब भूख से व्याकुल बछड़े अपनी माताओं के पास जाते एवं स्तनपान करते तो वे करूणावश उन्हें नहीं रोक सके। गांव वालों की शिकायते आयी एवं उन्हें यह कार्य छोड़ना पड़ा। उनके माता पिता ने उन्हें अल्पायु में ही कमाने के लिए बाहर भेजा। उन्होने गढ सिवाणा रियासत में अल्प समयावधि तक नौकरी की। परन्तु उनका चित किसी भी सांसारिक क्रियाकलाप में नहीं लगता था। वे हमेशा सोचा करते थे कि संसार में दुःख क्यो है ? लोगों की बुद्धि भ्रष्ट क्यों हो रही है?धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते है? भूकंप, सूखा, अकाल, हिमपात, अत्यन्त गर्मी, अत्यन्त सर्दी, असामयिक मृत्यु, महामारी, विभिन्न बिमारियां क्यों फैलती है? परमात्मा क्या है?परमात्मा को कैसे जाना जा सकता है?एवं सृष्टि सर्जक परमात्मा अपनी रचना को दुःख क्यों दे रहा है ?

ऐसे पारमार्थिक विचारों से ओतप्रोत व्यक्तित्व सांसारिक मोहमाया व प्रलोभन नहीं बांध सके। उन दिनों गढ सिवाणा के जंगल में सिद्ध योगी श्री भवानीनाथजी महाराज विराजे हुये थे। श्री ओखसिंहजी उनके दर्शन के लिये गये, उन्होंने योगीराज भवानीनाथ के चरणों मे श्रद्धा से शीष झुकाया एवं ब्रह्वेत्ता अन्तर्दृष्टा ऋषि श्री भवानीनाथ ने नतमस्तक श्री ओखसिंह के भीतर अवस्थित अवतारी पुरुष को योग शक्ति से जान लिया। उन्हें ज्ञात हुआ कि समय समीप है जब निष्कलंक अवतार अपना जगतहित मिशन आरंभ करने वाले है। श्री ओखसिंह के कमर पर बंधे चमड़े के पट्टे को देखकर श्री भवानीनाथ योगी बोले - ऐ बालक तूने यह चमड़े का पट्टा क्यो लगाया है। तूने तो अपने जगत् का अमर पट्टा लिखाया है।

श्री ओखसिंह को सिद्ध भवानीनाथ के श्री चरणों में अपूर्व शांति एवं आनंद का अनुभव हुआ।

उनका मन संसार से पूर्णत विरक्त हो गया। न नौकरी में मन लगा न घर में। परमात्मा की दिव्य सत्ता का अनुभव करना एवं संसार के सभी दुःखों एवं पीड़ाओं के कारणों का जानना उन्होंने अपने जीवन का मुख्य ध्येय बनाया। वे अपने गांव बांगडी आये। माताजी से अनुमति ली, घर त्याग दिया, नौकरी छोड़ दी। उन्होंने बारह वर्ष तक कठोर तपस्या की। परमात्मा की खोज में वे आबू, आडावला, गुजरात व मालवा के पहाड़ों मे घूमते थे। वे पेड़ों से स्वतः गिरे पत्तों एवं फूलों का आहार करते थे। कभी कभी भूखे प्यासे कई दिन निकल जाते थे। वे यदा कदा पहाड़ों के समीपवर्ती गांवो में आते एवं मेहनत मजदूरी करके झाडु, बुहारू लगाके अपना पेट भरते थे। उनका जीवन सरभंगी की तरह हो गया था। 12 वर्ष की कठो तपस्या के फलस्वरूप उन्हें परमज्ञान का अनुभव हुआ। ब्रह्मज्ञान में आकंठ डुबे श्री स्वामी ने कुछ भजनों एवं साखियों की रचना की जो कि आज भी श्रद्धालु

भाविकों द्वारा प्रेम से गायी जाती है। आत्मा एवं परमात्मा के बोध के बाद उन्हे अनूपस्वामी एवं अनूपदासजी के नाम से पुकारा जाने लगा।

परन्तु श्री अनूप स्वामीजी ने परमात्मा-अनुभव व ब्रह्मज्ञान तक ही अपनी साधना को सीमित नहीं रखा। उन्हें हमेशा यह दुःख बना रहता था कि संसार के सभी प्राणी विभिन्न पीड़ाये क्यों झेल रहे है। समस्त जड़ चेतन को प्रकृति क्यों दुःख देती है। ब्रह्मानंद में आकंठ डूबे श्री अनूप स्वामी महाराज को जीवन की युवावस्था में एक विचित्र एवं भयानक अनुभव हुआ जिसने उनके जीवन को झकझोर दिया। उन्होंने अपने तपोबल से जाना कि परमात्मा की इस विचित्र रचना में ध्यान, भक्ति योग जैसे ब्रह्मानुभव के मार्ग है तो इसके विपरीत कुछ ऐसी भी क्रियाएँ है जो प्रकृति के संतुलन को डावाडोल करती है। उन्होंने अपने तपोबल से जाना कि परमात्मा किसी जीव को पीड़ा नहीं देता एवं प्रकृति का संतुलन स्वतः

डावाडोल नहीं होता। उन्होंने तांत्रिक यातना से पीड़ित होकर विश्व के भले के लिए एक अभूतपूर्व संदेश दिया जो कि साररूप में अधोलिखित है।

"पृथ्वी पर सुदीर्घ काल से राक्षस विद्या का पाप किसी टापू पर चल रहा है। पाप करने वाले तांत्रिकों ने उस जगह को तंत्रबल से अदृश्य एवं अगम्य बना दिया है। वहाँ विभिन्न रक्तकुण्डों में यज्ञ हवन, पशुबलि, नरबलि, होम, जाप, आहुति एवं तांत्रिक अनुष्ठान बड़े पैमाने पर चल रहे है। यह राक्षस विद्या का पाप रावण हिरण्यकश्यप, कंस एवं कारून बादशाह ने भी चलाया था एवं इसी पाप से अकाल, सूखा, भूकम्प, तूफान, हिमपात, अत्यन्त गर्मी, अत्यन्त सर्दी, विभिन्न बिमारियाँ असामयिक मृत्यु, महामारी, (हैजा, प्लेग, एड्स (वर्तमान में) आदि फैलते है। उन्होंने अपने जीवन के 40 वर्ष इसी अनुभव को जग जाहिर करने में लगाये। उन्होंने कहा कि इन विपदाओं को आज तक परमात्मा

की लीला एवं प्रकृति का प्रकोप माना जाता रहा है, लेकिन मैं अनुभव कर रहा हुँ कि यह सब राक्षस विद्या का कुपरिणाम है। राक्षस विद्या के पाप से ही लोगों की बुद्धि भ्रष्ट हुई है एवं हो रही है, राक्षस विद्या के पाप से नास्त्रेयडेमस जैसे भविष्य वक्ताओं की भविष्य वाणियां जो कि सभी विश्वविनाश, खून-खराबा, नरसंहार व बुरे होने के सम्बन्ध में है वे सही हो जाती है, एवं समय रहते मानव सजग नहीं हुआ तो समूचे विश्व में मायावी, तांत्रिक शक्तियों का प्रभुत्व व शासन होगा व समूचा विश्व तबाह हो जायेगा। उन्होंने अपने अनुभव से पाप करने वालों को पहचाना एवं कहा कि राक्षस विद्या का पाप करने वाले लोग लोग दिखाऊ धर्म पुण्य करते है। जीवों की रक्षा करते है एवं धर्मात्मा बने फिरते है लेकिन गुप्त में पाप ही पाप करा रहे है जैसा रावण भी लोगों की नज़र में धर्मात्मा व तपस्वी बना फिरता था। उन्होंने अपनी पुस्तक में पाप कराने वाले विश्व विनाशकों के लिए राक्षस,

काफिर, सौदागर, महाजन, बनिये, एवं जादूगर जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।''

श्री अनूप स्वामी के जीवन में कई चम्कारं पूर्ण घटनाएं घटी। यथा गांव बालोतरा मे मृतगाय का हाथ के स्पर्श मात्र से जीवित होना, बालोतरा में ही अंधे सेवक द्वारा नेत्र ज्योति प्राप्त करना, गांव पादरू इलाका सिवाणा में ठाकुर के आदमी का मना करने पर भी स्नान करना, जहां गाये पानी पी रही थी एवं वह होद में तेल मेट साबुन लगाकर नहा रहा था, आज्ञा न मानने पर वह स्नान करके निकला व कोढी हो गया एवं अनूप स्वामी के नाम का प्रसाद बोलने पर पुनः ठीक हो गया। गांव चोटिला इलाका पाली में आशीवाद से एक दम्पत्ति के संतान हुई जो कि 25 वर्ष से विवाहित थे एवं बेऔलाद थे।

ये सभी परचे एवं चम्तकार आज भी लोग श्रद्धा भाव से याद करते है एवं कुछ लोग आज भी जीवित है जिनके जीवनकाल में ये चमत्कार घटित हुए थे। ये सब घटनायें

राक्षसी पाप की वजह से घटित हुयी।

परन्तु श्री अनूप स्वामी के जीवन की सर्वाधिक अविश्वसनीय, भयानक एवं रोंगटे खड़े करने वाली घटना जालोर जिले के बिजलिया के पहाड़ में घटी। श्री अनूप स्वामी महाराज इन्द्रजाल की पीड़ा को सहते हुए पहाड़ की एक गुफा में बैठे सोच रहे थे कि इतने दुःख से तो अच्छा है दम निकल जाए। तभी एक भयानक विस्फोट के साथ धरती फटी एवं श्री अनूप स्वामी जमीन ही जमीन में। विजालिया से 600 किमी दूर गुजरात प्रान्त में डाकोरजी के रास्ते में लालगुवाडी की हद में जहां 10-12 कोस के उजाड़ में झाड़ियां पड़ती है। बाहर निकले स्वामीजी 10-12 रोज के लगभग मूर्छित अवस्था में पड़े रहे एवं होश में आये तो देखा कि लोगों की बोली भी दूसरी एवं लोग भी अलग है। वे पूछते-पूछते पुनः मारवाड़ आये। श्री अनूप स्वामीजी ने अपनी पुस्तक ''जगतहितकारनी'' में इन चमत्कारों का विस्तृत वर्णन

किया है उन्होंने अपने अनुभव को विश्वहित में बताना आरम्भ कर दिया उन्होंने राजाओं महाराजाओं से निवेदन किया कि वे यथाशीघ्र इस इन्द्र जाल को बन्द कराने की व्यवस्था करे लेकिन श्री स्वामीजी के अनुभव को स्वीकार करना सहज नहीं था। तत्कालीन समाज ने उनकी विश्वहितेषी धर्मदेशना को मजाक समझा। राजाओं, महाराजाओं ने उनका घोर अपमान किया। तिरस्कार अपमान व तांत्रिक यातना सहते हुये भी उन्होंते अपना जगतहित मिशन जारी रखा।

लेकिन कुछ लोग उनके चमत्कारी एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके श्री चरणों में बैठे। उनको श्री स्वामीजी के सानिध्य में अकल्पनीय सुख का अनुभव हुआ। उनके विवेकशील श्रद्धालुओं ने दिव्य सत्संग में यह अनुभव किया कि परमज्ञान को उपलब्ध सिद्ध योगी की अनर्गल प्रलाप लगने वाली बातों के पीछे कुछ-कुछ आधार व अनुभव का बल है। वरना

वितराग प्रज्ञा पुरूष जिसके परिवार नहीं, जिसने शादी तक नहीं की एवं पहाड़ों मे अधिकांश समय बिताने वाले श्री अनूप स्वामीजी भोग लिप्सा में डूबे लोगों को क्यों समझाये क्यों तकलीफ देखे, क्यों लोगों के अपमान जनक व्यवहार व कटु व्यंग्यबाणों को झेले जरूर कुछ-कुछ अनुभव हुआ है, जो कि विश्व को बताना जगजाहिर करना अत्यन्त आवश्यक है। विश्व कल्याण हेतु असहाय पीड़ा झेलने वाले श्री अनूप स्वामीजी ने अपनी भौतिक देह की नश्वरता को ध्यान में रखते हुए अपने अनुभव को लिपिबद्ध अत्यन्त जरूरी समझा। उन्होंने अपने दीर्घ प्रवचन को लिपिबद्ध करवाकर जगतहितकारनी नामक ग्रन्थ की रचना की। जगतहितकारनी को समझना जीवन का सौभाग्य है, सुअवसर है एवं इसे चूकना परम दुर्भाग्य है। कुछ श्रद्धालुओं ने अटूट आस्था के साथ उनके विश्व कल्याणकारी सन्देश जन-जन तक पहुँचाया। तत्कालीन समाज में प्रचार करने वालों में सिरोही जिले के श्री हरिचंद

सोनी का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है। श्री हरिचंदजी महाराज जन्म से अन्धे थे।

श्री अनूप स्वामी जी महाराज का देहावसान आषाढ़ कृष्णा दूज सम्वत् 1978 को पाली जिले के गांव जाखोड़ा में हुआ। जाखोड़ा में उनकी निर्वाण तिथि से लेकर हर माह कृष्ण पक्ष की दूज को सत्संग समारोह का आयोजन होता है, जिस में सभी जाति धर्मो के लोग बिना किसी वर्ग भेद के बिना ऊँच-नीच की भावना के साथ विश्व बन्धुत्व का आदर्श स्थापित करते है। श्री अनूप स्वामीजी के जगत हितकारी उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिये उनके अनुयायी जगह-जगह मेलों का आयोजन कराते है। श्री अनूप स्वामीजी के भक्तों व अनुयायीयों को भाविक कहा जाता है। श्री अनूप स्वामीजी को नकलंग अवतार के रूप में पूजा जाता है। श्री अनूप स्वामीजी के मन्दिरों को झुपड़ी कहा जाता है। श्री अनूप मन्दिर की ध्वजा पंचरंगी (पांच तत्वों के रंग

पीत, हरित, श्याम, श्वेत, लाल) है। श्री अनूप स्वामीजी के भक्त लाखों की संख्या में ख़ास कर राजस्थान, गुजरात व महाराष्ट्र में बसें हुए है। प्रचार गति में तीव्रता आने से पंजाब, मध्यप्रदेश व उत्तर प्रदेश से भी कई श्रद्धालु जाखोड़ा स्थित नकलंगधाम पर दर्शनार्थ आते है।

श्री अनूप स्वामीजी के अहिंसा, प्रेम, साम्प्रदायिक सौहार्द व पर्यावरण सुरक्षा के धर्मोपदेशों का विधिवत् प्रचार के लिए अनूप मण्डल संस्था का गठन किया गया था। संस्था की सैकड़ों राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र में पूंर्णश्रद्धा अटूट आस्था के साथ कार्य कर रही है।

श्री अनूप स्वामीजी महाराज के उपदेश किसी जाति, समुदाय, सम्प्रदाय या धर्म के हित तक सीमित नहीं है। समूचे विश्व का कल्याण अनूप मण्डल का कार्यक्षेत्र है।

यदि समय रहते श्री अनूप स्वामीजी के संदेश को समझ लिया गया तो विश्व को तबाह होने से बचाया जा सकता है। वरना स्वामीजी के कथनानुसार सभी भविष्य-

वाणियां जो कि विनाश के बारे में कही गयी है वे सच्ची एवं खरी होगी एवं एक दिन समूचे विश्व पर तांत्रिक शक्तियाँ का प्रभुत्व एवं अधिकार होगा।

विश्व शान्ति एवं साम्प्रदायिक सौहार्द के पावन उद्देश्यों को कार्यरुप देने के लिए अनूप मण्डल ने जाखोड़ा ग्राम में 20-4-97 को एक विराट सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन करवाया था।

श्री अनूप स्वामीजी के दिव्य विश्वशांति मिशन से जुड़ने के लिए आपका भावभिन स्वागत एवं हार्दिक अभिनन्दन हैं।

स्वागत है सब जन का इस नकलंग देव दरबार में
ऐसा पावन स्थान नहीं संसार में।

आपके रचनात्मक सहयोग की अपेक्षा के साथ।

विनित :
श्री अनूप मण्डल राजस्थान